Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 17, Issue No. 1, April-2020, ISSN 2230-7540

ग्रामीण विकास में ग्रंथालय की भूमिका झारखण्ड के सन्दर्भ में

Priyanka Kumari[1]* Dr. Y. Meera Bai[2]

[1] Research Scholar, Kalinga University, Raipur

[2] PhD Supervisor, Kalinga University, Raipur

सार – *पुस्तकालयों के इतिहास का आधुनिक युग 17 सदी से माना जाता है। इस नव निर्माण काल का प्रभाव युगान्तर कारी सिध्द हुए। इस समय अनेक मध्य कालीन पुस्तकालयों का अस्तित्व समाप्त हो गया तथा अन्य प्रकार के पुस्तकालयों का जन्म हुआ मठों तथा धार्मिक संस्थाओं के समाप्त होने के साथ-साथ वहाँ किए गए पुस्तकों के संग्रह भी नष्ट होते चले गए। वहीं मानवतावाद, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं शैक्षणिक जागरण के प्रभाव से आधुनिक विज्ञान और अन्य विषयों का उद्भव और विकास होने लगा, तब विद्वानों और शिक्षित वर्ग में पुस्तकालयों के प्रति झुकाव बढ़ा और उसके सार्वजनिक उपयोग हेतु खोले जाने पर जोर दिया जाने लगा। इन सब घटनाओं के फलस्वरुप सर्व प्रथम आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से संबध्द बोडिल एन पुस्तकालय, जो कि अर्ध व्यक्तिगत ग्रंथालय था को सन् 1602 में समाप्त कर लोगों के लिए खोल दिया गया।*

कीवर्ड – ***ग्रामीण विकास, भूमिका झारखण्ड***

---------------------------------x---------------------------------

प्रस्तावना

इस युग में हम पुस्तकालयों के विकास का अध्ययन करने पर पाते हैं कि जर्मनी, इटली, प्रंस, अमेरिका, ब्रिटेन आदि देशों में पुस्तकालय के महत्व को समझा जाने लगा था और उसे आधुनिक स्वरुप प्रदान कर उसके विकास एवं सार्वजनिक उपयोग हेतु व्यवस्थित किया जाने लगा था। इस तारतम्य में राजकीय,राष्ट्रीय एवं शैक्षणिक पुस्तकालयों की स्थापना एवं मध्य कालीन पुस्तकालयों का पुनः संगठन किया गया। 1692 में फ्रांस में Bibliotheque Nationale को सार्वजनिक कर दिया गया। इटली में 1614 में रोम स्थित Bibliotheca Angalica को सबके उपयोग के लिए खोल दिया गया। जर्मनी के राजकीय एवं प्रान्तीय पुस्तकालयों में ग्रंथालयी नियुक्त किए गए। आधुनिक युग के महान ग्रंथालयी गैब्रीनौडे थे जिनका मानना था कि पुस्तकालय में ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र से संबंधित पुस्तकें उपलब्ध हों। इनके पुस्तकालय की व्याख्या तथा वास्तुकला पर advice to the formation of a library नाम की पुस्तक 1627 में, ज्ञान के वर्गीकरण पर 1643 में पुस्तकें प्रकाशित हुई। ब्रिटेन में इस सदी में आक्सफोर्ड एवं कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से संबध्द संगठित पुस्तकालय विद्वानों एवं शिक्षार्थीयों के सार्वजनिक उपयोग हेतु थे। ब्रिटेन में प्रमुखत: तीन प्रकार के पुस्तकालय इस युग में थे। प्रथम संस्थागत पुस्तकालय जो कि चर्च से संबंधित होते थे। व्दितीय धर्मादय (एण्डावड) से स्थापित पुस्तकालय सन् 1800 तक वहाँ ऐसे 200 पुस्तकालय थे जो कि गाँवो में स्थापित थे। एवं पादरियों के अलावा अन्य लोगों के लिए भी खुले रहते थे। तृतीय (अभिठधान, सब्स्क्रिप्शन) पुस्तकालय - इस प्रकार के पुस्तकालय व्यवसायिक एवं व्यापारी लोगो की मांग को पूरा करने के लिए खोले गए थे। जहाँ वार्षिक चंदा लेकर पुस्तकें घर ले जाने के लिए दिए जाते थे। जिसे वे अवकाश के क्षणों में पढ़ते थे।

सन् 1680 में एडिनबर्ग के वकीलों के लिए राष्ट्रीय पुस्तकालय स्कॉटलैंड में खोला गया जिसे 1925 में सार्वजनिक घोषित किया गया था इस तरह हम पाते हैं कि 19 सदी तक आते-आते ब्रिटेन की जनता पुस्तकालय की आवश्यकता से अच्छी तरह परिचित हो गई थी, एवं उसका उपयोग अपने बौध्दिक विकास तथा मनोरंजन हेतु करने लगी थी।

अमेरिका में भी ब्रिटेन की तरह पुस्तकालयों के सार्वजनिक महत्व को तीव्रता से महसूस किया जाने लगा था। ईसाई धर्म गुरुओं ने ईश्वर के संदेश को सार्वजनिक करने के लिए धार्मिक पुस्तकालय की स्थापना करना आरंभ किया। इस प्रकार धार्मिक प्रभाव ने वहाँ सार्वजनिक पुस्तकालय को जन्म दिया। जनता के हर प्रकार की बौध्दिक आवश्यकताओं को पुरा करने हेतु वहाँ विविध प्रकार के ग्रंथ संग्रहित किये जाने लगे। धीरे-धीरे वहाँ सब्स्क्रिप्शन एवं सोसाइटी पुस्तकालयों की स्थापना होने लगी। सन् 1731 में सर्व प्रथम फिलेडेल्फिया में पुस्तकालय कम्पनी के रुप में एक शुल्क पुस्तकालय खोला गया, अगले दो सौ वर्षो में वहाँ अनेक पुस्तकालय स्थापित हुए जिनमें बोस्टन, अथेनियम, न्यूयार्क सोसायटी तथा चार्लेस्टन पुस्तकालय प्रमुख हैं।

भारत में मुसलमानी शासन के अंत और अंग्रेजों के आगमन के बीच के समय को पुस्तकालय विकास की दृष्टि से अप्रगतिशील कहा जा सकता है। फिर अंग्रेजों ने अपने धर्म प्रचार और शिक्षा की ओर ज्यादा ध्यान दिया। ईसाई मिशनरी के फादर का आगरा एवं मोगोर में अपना व्यक्तिगत पुस्तकालय था, जहाँ यूरोपीय भाषाओं के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के ग्रंथ भी संग्रहित थे। 17 वीं सदी में कैप्टन विलियम व्हाईटफील्ड ने मद्रास के अंग्रेजी कालोनी में एक पुस्तकालय स्थापित किया। जहां बाद में फोडेसेंट जार्ज ने ईस्ट इंडिया कम्पनी का प्रथम ग्रंथालय स्थापित किया। कम्पनी ने हुगली और मुबंई स्थित अपने कार्यालय में पुस्तकालयों की स्थापना की। तत्पश्चात् कम्पनी ने अपने राजनैतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सन् 1681 में कलकत्ता मदरसा, सन् 1791 में बनारस संस्कृत कालेज तथा सन् 1800 में फोर्ट विलियम कालेज एवं उससे संबध्द पुस्तकालय की स्थापना की, जो धीरे-धीरे महत्वपूर्ण पुस्तकालय बन गए।

सन् 1774 में सर विलियम जोन्स एवं अंग्रेज विद्वान व्यक्तियों के प्रयास से खोला गया एशियाटिक सोसायटी और उससे संबध्द पुस्तकालय महत्वपूर्ण था। एशिया के पुरातत्व,कला, विज्ञान और साहित्य की खोज करना इस संस्था का प्रमुख उद्देश्य था। भारतीय विद्या के प्रचार -प्रसार, हस्त लिखित ग्रंथों के संग्रह एवं संरक्षण में उस संस्था का विशेष स्थान है। इसमें 20 हजार से अधिक प्राचीन हस्त लिखित ग्रंथ है। जिनमें 9,10 और 11वीं सदी के ग्रंथ देखे जा सकते है।

ज्ञान सार्वजनिक है और उपलब्ध समस्त ज्ञान बिना किसी भेद-भाव के समस्त लोगों को मिलना चाहिए इस विचार -धारा के आने पर स्वतंत्र एवं प्रबुद्ध देशों में प्रजातंत्र की बुनियाद शिक्षा को सार्वजनिक कर दिया गया। और उसके विकासपरक तत्व ग्रंथालय को भी धीरे-धीरे सार्वजनिक घोषित कर दिया गया। इस प्रकार 19वीं सदी में आधुनिक ग्रंथालय का उदय होता है।

आधुनिक पुस्तकालय को मूर्तरुप देने में उसे प्रोत्साहित और प्रेरणा देने की दिशा में ब्रिटेन एवं अमेरिका का प्रयत्न उल्लेखनीय है। ब्रिटेन में 19 वीं सदी के पूर्वार्द्ध से ही जन पुस्तकालय आन्दोलन एवं पुस्तकालय कला का आरंभ होता है। पहले वहाँ पुस्तकालय धनी एवं मध्यम वर्ग तक ही सीमित थी। पर सन् 1800 में दर्शन के शिक्षक जार्ज बरबेक ने स्काटलैंड में कारीगरों को प्रशिक्षित करने के लिए एक मैकेनिक इंस्टीट्यूट खोला जहाँ एक पुस्तकालय भी था, इस प्रकार वहाँ गरीब और साधारण लोगों के मध्य पढ़ने-लिखने में रुचि जागृत होने लगी। इस संस्था का अनुसरण सारे देश में किया जाने लगा। 1810 में स्काटलैंड में चल पुस्तकालय प्रारंभ हुआ। 1827 में हार्न की सूची करण संहिता तथा वर्गीकरण पद्धति कैम्ब्रिज में प्रकाशित हुई। 1832 में ब्रिटेन एवं फ्रांस के मध्य पुस्तकों का विनियम प्रारंभ हुआ जिसने पुस्तकालय सहयोग को मूर्त रुप प्रदान किया। सन् 1837 में सर एण्टीनियों पैनोजी को ब्रिटिश म्यूजियम के मुद्रित विभाग में कीपर के रुप में नियुक्त किया गया यही पर 1842 में पैनोजी ने उपलब्ध पुस्तकों को व्यवस्थित रुप से सूचीबद्ध करने के लिए सूची करण के नियम बनाए।

सन् 1835 में ब्रिटिश म्यूजियम (पुस्तकालय) में सुधार करने हेतु संसदीय समिति का गठन किया गया। वहीं 1845 में संसद में एक कानून पारित कर उपनगरीय परिषदों को सार्वजनिक संग्रहालय स्थापित करने के लिए कर लगाने का अधिकार प्रदान किया गया। सन् 1850 में ब्रिटिश संसद ने 10,000 से अधिक जनसंख्या वाले ग्रामों में सार्वजनिक पुस्तकालय स्थापित किया। सन् 1877 में पुस्तकालय संघ की स्थापना, 1886 में साम्राज्ञी विक्टोरिया का जयंती वर्ष अधिक पुस्तकालयों की स्थापना करके मनाना आदि ऐसे कार्य थे जो पुस्तकालयों की महत्ता प्रदर्शित करते थे।

ग्रेट ब्रिटेन अपनी राष्ट्र व्यापी सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली के प्रसार के एक महत्वपूर्ण स्वरुप में अमेरिका से आगे रहा है। जहाँ अमेरिका के विभिन्न राज्यों के स्थानीय पुस्तकालय इकाई के लिए पुस्तकालय कानून में पर्याप्त विभिन्नता है। वही पर ग्रेट ब्रिटेन में प्रांरभ से ही संसद सम्पूर्ण देश के लिए कानून पारित करता रहा है। इसके फलस्वरुप प्रांरभ से ही वहाँ अधिक एकरूपता रही है। ग्रेट ब्रिटेन में प्रथम विश्व युद्ध के बाद आर्थिक पुर्ननिर्माण के व्यापक उपायों में सन् 1918 का पुस्तकालय अधिनियम भी था। जिनमे उस समय तक पुस्तकालय करा रोपण की सीमा

को समाप्त कर दिया गया और देश में पुस्तकालय प्राधिकारो का निर्माण किया। जर्मनी के मुक्ति संग्राम (1813-15) के व्यापक सामाजिक क्रांति के फलस्वरुप कारीगर व शैक्षणिक संघों ने सार्वजनिक उपयोग हेतु अनेक छोटे व चल पुस्तकालयों की व्यवस्था की। 1841 में इतिहासकार फ्रेण्डरिच के वैज्ञानिक व्याख्यान आयोजित करने के लिए स्थापित संघ ने 1850 में चार लोकप्रिय ग्रंथालय स्थापित किये। 1907 में बर्लिन ने एक केन्द्रीय पुस्तकालय स्थापित किया एवं बर्लिन के प्रशासनिक जिलों में स्थापित 130 पुस्तकालयों का नियंत्रण इस केन्द्रीय पुस्तकालय को दे दिया। 19 वीं सदी में यूरोप के पूर्वोत्तर देशों की तुलना में फ्रांस, इटली और रुस में पुस्तकालय अविकसित थे, इसी सदी से ही वहाँ पुस्तकालय आन्दोलन का जन्म और विकास तेजी के साथ हुआ।

भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासकों ने कलकत्ता में एशियाटिक सोसाइटी और उसका पुस्तकालय (1774) तथा बाम्बें में रायल एशियाटिक सोसाइटी (1804) की स्थापना की। 1783 में लंदन में इण्डिया आफिस लाइब्रेरी की स्थापना कर असंख्य भारतीय ग्रंथ तथा अन्य ऐतिहासिक महत्व के साहित्य वहाँ ले जाकर जमा किए जाने लगा। भारत में स्थानीय लोगों को आधुनिक वातावरण में शिक्षा देने के लिए कम्पनी ने वाराणसी संस्कृत कॉलेज (1791), कलकत्ता में फोर्ड विलियम कॉलेज (1800), ओरिएन्टल सेमेनरी (1823) और संस्कृत कॉलेज (1824) की स्थापना किए। जिससे संबध्द समृध्द पुस्तकालय थे। उच्च शिक्षा हेतु 1816 में कलकत्ता में स्थापित हिन्द कालेज से संबध्द पुस्तकालय , समस्त उपलब्ध पुस्तकालयों से अधिक समृद्ध व सर्वोत्तम था। मद्रास में 1812 में स्थापित लिट्टरी सोसाइटी से जुड़ा पुस्तकालय था।

1812 में कलकत्ता में एक जन पुस्तकालय (पिपुल्स लाइब्रेरी) की स्थापना की गई। भारतीय विद्या प्रेमी कर्नल मैकेजी, बहुभाषी डॉ. लिडम जोन्स और सी0पी0 जैन द्वारा संग्रहित ग्रंथ एवं दान,क्रय से प्राप्त हस्त लिखित ग्रंथों की सुरक्षा हेतु मद्रास सरकार ने 1828 में गवर्नमेन्ट 37 ओरिएन्टल मेनुस्कृप्ट्स लाइब्रेरी मद्रास की स्थापना की। 1870 में यह पुस्तकालय मद्रास प्रेसीडेंसी कालेज में स्थित कर संगठित किया गया और अब यह मद्रास विश्वविद्यालय भवन में स्वतंत्र रुप से स्थापित है। यहाँ पर 50 हजार से अधिक हस्त लिखित ग्रंथ उपलब्ध हैं। आधुनिक जन पुस्तकालय के रुप में 1835 में कलकत्ता पब्लिक लाइब्रेरी का जन्म होता है, 1848 तक यहाँ 20 हजार ग्रंथ संग्रहित थे। 1890 में कलकत्ता नगर पालिका द्वारा इसका प्रबंध किया जाने लगा। 1886 में अड़यार ग्रंथालय मद्रास की स्थापना की गई, यहां पर 20 हजार से अधिक हस्तलिखित ग्रंथों का महत्वपूर्ण संग्रह है। इसी तरह 1891 में महाराजा चामराज ओडियार ने मैसूर प्राच्य विद्या ग्रंथालय की स्थापना की।

20वीं सदी के प्रारंभ में भारत में अंग्रेजों का शासन अपनी चरम सीमा में था। परन्तु उस समय भारत में पुस्तकालय की स्थिति बहुत खराब नही थी। 1891 में खुदाबख्श ग्रंथालय पटना, 1924 में सिन्हा पुस्तकालय, 1936 में हिन्दी प्रयाग पुस्तकालय की स्थापना हुई। इण्डिया आफिस लाइब्रेरी में लगभग 95 भाषाओं की पुस्तकें, हस्तलिखित ग्रंथ, चित्रकला, फोटो एवं अन्य वस्तुएं हैं। प्रेस सुविधा उपलब्ध होने पर भारत में समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं भी छपने लगी। समाचार दर्पण 1818 प्रथम बंगाली पत्रिका एवं 1839 में प्रथम बंगाली दैनिक अखबार संवत् अवकर 1839 में निकली। उत्तर प्रदेश में शिक्षा प्रसार विभागश् खोला गया, जिसके अन्तर्गत गावों में पुस्तकालय व वाचनालय खोले गए। बंबई में 1939-40 में पुस्तकालय विकास समिति श्री ए.ए.ए. फैजी की अध्यक्षता में बनी, जिनके रिपोर्ट के आधार पर पुस्तकालय के विकास हेतु कार्य किए गए।

1869 में डिलवरी आफ बुक एक्ट बनाया गया था जिसके तहत् प्रकाशक को इंपीरियल लाईब्रेरी में अपने प्रकाशन की एक प्रति निःशुल्क आवश्यक रुप से भेजने की व्यवस्था की गई थी। 1928 में श्री नरसिंह स्वामी व इबाकी वेंकट रमैया के प्रयास से एक ऑल इंडिया पब्लिक लाइब्रेरीश् एशोसियशन बना परन्तु इसने कुछ वर्षो बाद कार्य करना बंद कर दिया। तत्पश्चात 1933 में श्ऑल इंडिया लाइब्रेरी एसोशियेशनश् कलकत्ता स्थापित हुआ।

स्वतंत्रता के पश्चात भारत के केन्द्रीय शिक्षा विभाग ने पूरे देश में पुस्तकालय की जो बातें सोची उसकी रुपरेखा निम्नलिखित है -

- ब्रिटिश काल में स्थापित इम्पीरियल लाइब्रेरी को राष्ट्रीय पुस्तकालय का रुप दिया जाये और उसका विकास किया जाए।
- नेशनल बिब्लियोग्राफी के निर्माण की ओर ध्यान दिया जाए।
- प्रदेशों में सेण्ट्रल स्टेट लाइब्रेरीऔर जिला पुस्तकालय स्थापित किये जायें।
- राजधानी दिल्ली में एक केन्द्रीय पुस्तकालय हो जिसके द्वारा सभी पुस्तकालय को एक सूत्र में गूंथ दिये जायें।

- लाइब्रेरी एडवाइजरी का निर्माण किया जाए।
- जिला पुस्तकालयों द्वारा ग्राम पुस्तकालयों को संगठित किया जाये तथा जनता के बौध्दिक विकास के लिए सम्भावित प्रयास किया जाए।
- केन्द्रीय सरकार ने श्डिलवरी आफ बुक्स एक्टश् के अन्तर्गत 20मई 1954 से प्रत्येक प्रकाशन की एक-एक प्रति राष्ट्रीय पुस्तकालय कलकत्ता, सेल्ट्रल पब्लिक लाइब्रेरी बंबई, कोनेमारा लाईब्रेरी मद्रास को भेजना अनिवार्य कर दिया गया।
- 10 सितम्बर 1955 को कोनेमारा लाइब्रेरी तथा 4 नवंबर 1955 को सेन्ट्रल पब्लिक दय वालिका शिकारी लाईब्रेरी बंबई को राष्ट्रीय पुस्तकालय घोषित कर दिया गया।

सन् 1956 में भारत के नवगठित प्रांतों के सभी प्रकार के पुस्तकालयों की एक डायरेक्ट्री केन्द्रीय शिक्षण विभाग ने श्लाइब्रेरी इन इंडियाश् नाम से प्रकाशित की जिनमें देश के प्रसिद्ध 1166 पुस्तकालयों का विवरण दिया गया है। 1952 में भारत व युनेस्को के सहयोग से दिल्ली में सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना की गई, जो आज देश के श्रेष्ठतम पुस्तकालयों में से एक है व ग्रंथालय सेवा में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। नेशनल बुक ट्रस्ट की स्थापना जनता तक सस्ता व स्वस्थ साहित्य उपलब्ध कराने के तहत की गई।

यदि शव पुरत पुस्तकालय के इतिहास के संक्षिप्त अध्ययन से पता चलता है कि विश्व के समस्त प्राचीन एवं आधुनिक सभ्यताओं में पुस्तकालय का अस्तित्व किसी न किसी रूप में अवश्य विद्यमान था। अत: इसके इतिहास के अध्ययन से यह निश्चित रुप से कहा जा सकता है कि पुस्तकालय के अस्तित्व व महत्व को मानव जाति प्रांरभ से ही मानती चली आ रही है।

सार्वजनिक पुस्तकालय

सार्वजनिक पुस्तकालयों का अर्थ है ष्जनता के व्दारा , जनता के हित में संचालित पुस्तकालय इसके द्वारा समाज के प्रत्येक वर्ग, वर्ण, धर्म, सम्प्रदाय, विचार, लिंग व उम्र के लोगों को पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। पाठ्य सामग्री द्वारा समाज के प्रत्येक व्यक्ति की सेवा करना सार्वजनिक पुस्तकालय कर्तव्य होता है।

सार्वजनिक पुस्तकालय आधुनिक युग एवं प्रजातंत्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। व्यापक शिक्षा के लिए जीवन भर सेवा प्रदान करने वाले साधन के रुप में इसका महत्व है। मुख्यत: यह नागरिकों को शिक्षित करता है, किन्तु पाठकों में पठन की रुचि जागृत करने में भी इसका महत्व पूर्ण योगदान होता है

यूनेस्को सार्वजनिक पुस्तकालय घोषणा पत्र 1949, संशोधित 1972 के अनुसार सार्वजनिक पुस्तकालय है

1. जो निश्चित अधिनियम द्वारा स्थापित हो।
2. जिनका संचालन पूर्ण रुप से जनता के धन द्वारा हो।
3. जो पूर्ण रुप से निःशुल्क व समुदाय के लिए समान रुप से उपलब्ध हो। इसके निम्न भेद हैं -
    1. राष्ट्रीय पुस्तकालय
    2. राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय
    3. जिला केन्द्रीय पुस्तकालय
    4. अनुमंडलीय पुस्तकालय
    5. नगर पुस्तकालय
    6. प्रखंड पुस्तकालय
    7. पंचायत पुस्तकालय
    8. ग्रामीण पुस्तकालय

पुस्तकालय सलाहकार समिति भारत सरकार ने भारत में सार्वजनिक पुस्तकालयों के पाँच भेद बतायें हैं -

1. राष्ट्रीय पुस्तकालय
2. राज्य पुस्तकालय
3. जिला पुस्तकालय
4. प्रखंड पुस्तकालय
5. पंचायत पुस्तकालय

शैक्षणिक पुस्तकालय

कोई भी शिक्षण संस्था एक अच्छे व सम्पन्न पुस्तकालय के बिना अधुरी है। श्री फ्रांसीस केपल के अनुसार "राष्ट्र की उच्च शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थाओं का स्तर कुल संस्थाओं में हैंण्डबुक आफ स्पेशल लाइब्रेरियन शीप एण्ड इन्फारमेशन

वर्क नामक पुस्तक में इसको परिभाषित करते हुए कहा गया है कि "विशिष्ट पुस्तकालय एक ऐसा पुस्तकालय है जिसमें किसी विशिष्ट विषय अथवा विषयों पर ही अध्ययन सामग्री उपलब्ध होष्।इनके निम्न विभेद किए गए है -

1. **शोध पुस्तकालय** - ऐसे पुस्तकालय अलग -अलग क्षेत्रों से संबंधित होते है जो कि ज्ञान की वृध्दि में लगे शोधार्थी को सहायता प्रदान करती है ऐसे पुस्तकालय ज्ञान के किसी क्षेत्र की उन्नति से संबंधित होते हैं। जैसे- भौतिक,रसायन,कृषि अनुसंधान आदि है।

2. **विभागीय पुस्तकालय** - सरकारी संस्थान प्रशासन को सुचारु रुप से चलाने के लिए होते है जैसे लोकसभा, विधान सभा,योजना आयोग के पुस्तकालय।

3. **व्यवसायिक पुस्तकालय** - इस प्रकार के पुस्तकालय का संबंध वाणिज्य व्यवसाय से संबंधित होता है। जिससे वाणिज्य पत्र-पत्रिकाएं,समय सारणी,आंकड़े,मान चित्रावलियाँ व्यापारिक कार्य में सहायता करने वाले ग्रंथ, मूल्य से संबंधित आंकड़े,कानून संबंधी,बाजार संबंधी आंकड़े,आयकर,बिक्री आदि से संबंधित सूचना संग्रहित होती है।

4. **औद्योगिक पुस्तकालय** - लोहा, स्पात, सीमेंट, कपास, चीनी, रेशम, आदि से संबंधित उघोगों में उद्योग धंधों के समुचित विकास के लिए एवं बाजार में अपनी प्रतिस्पर्धा बनाए रखने के लिए ये पुस्तकालय उद्योग से संबंधित महत्व पूर्ण जानकारी संग्रहित करते हैं।

5. **अस्पताल पुस्तकालय** - रोगियों को आत्मसंबल देने में एवं आत्म विश्वास बढ़ाने के लिए अस्पताल पुस्तकालय ऐसे प्रेरणाप्रद साहित्य का संग्रह करते हैं जो उसे अपने परेशानियोंध्रोगों से लड़ने के लिए जागृत करती है साथ ही साथ समय व्यतीत करने के लिए मनोरंजक साहित्य का भी संग्रह किया जाता है।

6. **अंधों के लिए पुस्तकालय** - यहाँ विशेष प्रकार के ब्रेल साहित्य का संग्रह किया जाता है।

7. **जेल पुस्तकालय** - जेल के कैदियों में अपराधिक प्रवृत्ति को रोकने वाले एवं समय व्यतीत करने के लिए जेल पुस्तकालय ऐसे साहित्य का संग्रह करता है जो प्रेरणास्पद भी हो।

8. **संगीत पुस्तकालय** - संगीत के ग्रंथों का संग्रह करने वाले पुस्तकालय जिनमें ग्रामोफोन, चलचित्र, रिकार्ड व इन विषयों से संबंधित पुस्तकें होती है।

9. **समाचार पत्र पुस्तकालय** – प्रत्येक समाचार पत्र कार्यालय के साथ वहाँ के कर्मचारियों के संदर्भ के लिए अलग पुस्तकालय होता है जो समाचार से संबंधित किसी प्रकार की सूचना आवश्यकतानुसार संपादक, संवाददाता या अन्य व्यक्ति को देता है। दैनिक समाचार पत्र में किसी भी विशेष विषय पर प्रस्तुत संदर्भ लेने में ऐसे पुस्तकालयों से सहायता ली जाती है।

10. **बाल पुस्तकालय** - बच्चों में पुस्तकें पढ़ने की प्रवृत्ति डालने,मानसिक विकास आदि के लिए बाल पुस्तकालय स्थापित किये जाते हैं जो उनके व्यक्तित्व व चरित्र को सुदृढ बनाने में सहायक होता है। इनमें भिन्न-भिन्न पाठ्य सामग्री (बाल साहित्य) कहानी, कविता व ज्ञान -विज्ञान ,खेल कूद से संबंधित साहित्य होता है जिसे पढ़कर बच्चों में इन विषयों के प्रति रुचि जागृत होती है। इनके अलावा निम्न भी विशिष्ट पुस्तकालय के अन्तर्गत रखे जाते है

11. **नाविक पुस्तकालय** - नाविकों के लिए स्थापित यह पुस्तकालय उन्हें सांसारिक घटनाओं, देश विदेश से संबंधित जलवायु, भोजन, वस्त्र, रीति रिवाज, स्वास्थ्य के अलावा मनोरंजक साहित्य उपलब्ध कराता है। डॉ. एस.आर. रंगनाथन ने "पुस्तकालय विज्ञान के पाँच सूत्र" में इन पुस्तकालयों को महत्व पूर्ण बताया है।

12. **दृश्य-श्रव्य पुस्तकालय** - इस प्रकार के पुस्तकालयों में चलचित्र, ग्रामोंफोन रिकार्ड्स, टेपरिकार्ड्स, माइक्रोफिल्म आदि व इन विषयों से संबंधित पत्र-पत्रिकाएं संग्रहितकी जाती है। विकसित पुस्तकालय में यह पुस्तकालय एक विभाग के रुप में कार्य करता है।

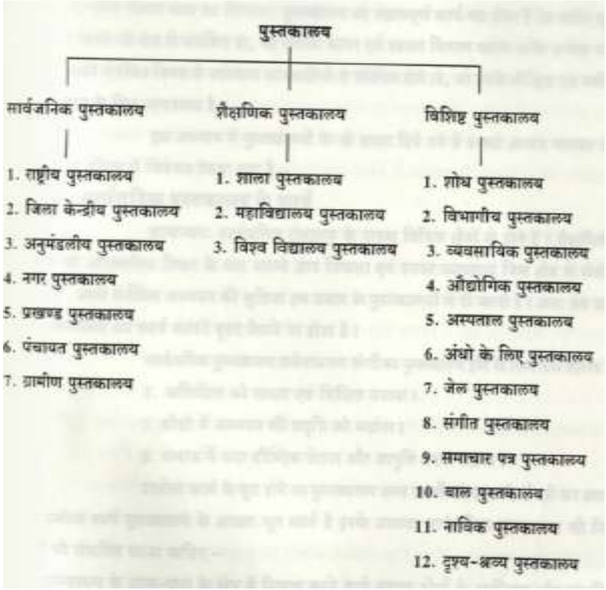

राबर्ट डी.ले.- ने सार्वजनिक पुस्तकालय के कार्यों को बिन्दुवार विभाजित किया है - जन जीवन- विविध विषयों के प्रति जन रुचि जागृत करना एवं लोगों की बौद्धिक क्षमता बढ़ाने में उनकी सहायता करना।

उद्योगधंधे-संबंधित क्षेत्र में स्थापित उद्योग संबंधी नवीनतम जानकारी उपलब्ध कराना एवं उपयोगी धंधों में प्रवीण होने के लिए लोगों को आवश्यक सूचनाएं उपलब्ध कराना है। सांस्कृतिक क्षेत्रों में लोगों को अवसर प्रदान करने में एवं उनकी क्षमता बढ़ाने के लिए आवश्यक साहित्य उपलब्ध कराना।

मनोरंजक - अवकाश के समय का सदुपयोग करने एवं उसके द्वारा व्यक्तिगत एवं सामाजिक कल्याण की वृद्धि करने में लोगों की सहायता करना।

सुचना- विभिन्न स्तर के पाठकों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित चाही गई जानकारी उपलब्ध कराने में पुस्तकालय को सदैव सजग रहना चाहिए।

वे लोग जो किसी विशेष क्षेत्र में विशेष विषय पर ज्ञान के विस्तार में सहायता कर रहे हैं, उन लोगों को उनसे संबंधित जानकारी उपलब्ध कराना अर्थात् शोधार्थी को शोध परक जानकारी उपलब्ध कराना।

अत: सार्वजनिक पुस्तकालय का कार्य क्षेत्र काफी फैला हुआ होता है। जहां विविध उन्हें पर विभिन्न बौद्धिक स्तर के पाठक अपनी जिज्ञासा शांत करना चाहते हैं। ऐसे में सार्वजनिक पुस्तकालय का कार्य अत्यंत उत्तरदायित्व पूर्ण हो जाता है, कि वे समस्त प्रकार के पाठकों का ज्ञान बढ़ाने की सहायता करें एवं ऐसा वर्ग जो पुस्तकालय सेवा से अपरिचित है उन्हें इस सेवा से अवगत करा पुस्तकालय उपयोग हेतु प्रेरित करने में सहायता करें। उसके पार

शैक्षणिक पुस्तकालय के कार्य

विशाल व्यवहारिक शिक्षा का उद्देश्य मुख्यत: विद्यार्थी के छुपे हुए बौद्धिक चेतना को जागृत उन्हें विकसित करना है ताकि वे अपने विषय से संबंधित नवीनतम जानकारी को प्राप्त करने में सदैव रहे। इसके अलावा छात्रों के अध्ययन से संबंधित विषयों से अच्छी तरह अवगत कराना और ज्ञान द्वारा विद्यार्थियों को स्वावलम्बी बनाना।

व्यवहारिक शिक्षा के उपरोक्त उद्देश्य बिना किसी पुस्तकालयीन सहायता के असंभव है। कि कोई भी जानकारी जो नवीनतम् और प्राचीन है उनकी आवश्यकता छात्रों को अपने विषय के ज्ञान के लिए आवश्यक है। किन्तु आज चारों ओर ज्ञान का विस्फोट जिस तेजी से हो रहा है वहां भी छात्र या शिक्षक के लिए यह सम्भव नहीं है कि वे समस्त जानकारी का संकलन बिना किसी पुस्तकालयीन सहायता के कर सकें। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे दिन-रात शोध व उनके नित नये कार्य उससे उत्पन्न नये तथ्य इन सबका संकलन किसी पुस्तकालय के द्वारा ही संभव है। और छात्रों शिक्षाणिक विकास हेतु इन नित नये हो रहे प्रयोग की जानकारी छात्रों को देनी भी आवश्यक है ताकिध्यान विषय पर हो रहे नवीनतम खोजों व शोधों से अवगत रहें। एवं उनका उपयोग अपने अध्ययन में कर सके, ऐसे में शैक्षणिक पुस्तकालय का यह दायित्व बन जाता है कि वे अपने शैक्षणिक संस्थान में पढ़ाए जाने वाले विषयों एवं उनसे संबंधित नवीनतम पाठ्य सामग्री शिक्षकों व छात्रों के लिए हमेशा उपलब्ध रखे।

शैक्षणिक ग्रंथालय विभिन्न स्तर के होते हैं शाला पुस्तकालय, महाविद्यालयीन पुस्तकालय, विश्वविद्यालय ग्रंथालय। शाला पुस्तकालय का कार्य बच्चों में पढ़ने-पढ़ाने की रुचि जागृत करना है मौलिक विषयों से छात्र-छात्राओं को परिचित कराना और विद्यार्थियों में सामान्य ज्ञान, अच्छे विचार और रुचि का विकास करने हेतु ऐसे साहित्य उपलब्ध कराना। प्रयोगशाला के रुप में ग्रंथालय का और साधन के रुप में पुस्तकों के उपयोग कैसे करना है इस संबंध में शिक्षा देना (जिसे पुस्तकालय शिक्षा भी कहा जाता है)। ऐसे साहित्य उपलब्ध कराना जिससे उनमें अध्ययन के प्रति रुचि जागृत हो, इस प्रकार शाला पुस्तकालय बच्चों को ज्ञान

के क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए उन्हें योग्य बनाने में अपना महत्वपूर्ण कार्य करता है।

समाज की आवश्यकता

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह भी अपने जीवन को बनाए रखने के लिए समाज के अन्य लोगों पर निर्भर रहता है। एक किसान द्वारा उपजाई गई फसल का उपयोग डाक्टर, इन्जीनियर, शिक्षक, दुकानदार सभी करते हैं जबकि डाक्टर को उसी किसान के स्वास्थ्य की देखभाल करनी होती है, वहीं पर शिक्षक इन दोनों वर्ग को शिक्षित कर ज्ञानी बनाता है ताकि वे अपने क्षेत्र में प्रगति कर समाज को लाभ पहुंचाए। यह कल्पना से परे है कि मनुष्य अकेला जीवन यापन कर ले, किसी एक व्यक्ति के द्वारा प्राप्त किए गए ज्ञानध्आविष्कार का महत्व तभी है जब उसका उपयोग दूसरे व्यक्तियों के कल्याण व विकास के लिए हो। अत: मनुष्य अपने विकास अपनी मानसिक सुरक्षा आदि का अनुभव अन्य मनुष्यों के साथ रहकर ही प्राप्त कर सकता है। जो कि व्यक्तियों द्वारा बनाए गए समाज में ही संभव है। इसके अलावा व्यक्ति में पारस्परिक प्रेम, सहयोग, सहनशीलता, सहिष्णुता, आज्ञापालन जैसे गुणों का विकास समाज के द्वारा ही होता है। समाज के द्वारा ही व्यक्ति समाज एवं परिवार के रीति रिवाज, परम्पराएं, प्रथाएं, मूल्य तथा प्रतिमानों का पालन करना सीखता है। इस प्रकार समाज के द्वारा ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होने के साथ-साथ सामाजिक विकास होता है तथा वह एक सामाजिक प्राणी के रुप में अपनी पहचान बनाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

देश व प्रदेश में ऐसी अनेक विशिष्ट योजनाएं है जो केवल ग्रामीण क्षेत्रो को ध्यान में रखकर बनाई गई है। जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, पंचायत एवं समाज सेवा विभाग ऐसे विभाग। जिनका कार्यक्षेत्र का दायरा ग्रामीण क्षेत्र ही है। इसके अलावा ऐसे अनेक गैर सरकारी एवं सामाजिक संस्थाए है जो ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले लोगों के आर्थिक सामाजिक स्तर को ऊचा उठाने हेतु वर्षों से प्रयासरत है। गांव के सर्वांगीण विकास हेतु ही देश भर में पंचायती राज की व्यवस्था की गई है।

शोध परिकल्पना

सामाजिक विचार कभी-कभी विस्मयकारी खोजें सामने लाते है। साक्षरता अभियान, ग्रामीण विकास, जन पुस्तकालय इन्ही विचारों की देन है। ग्रामीण समाज की शैक्षणिक, आर्थिक व सामाजिक स्थिति सुधारने ग्रामीण क्षेत्रों तक विकास का लाभ पहुंचाकर ग्रामीण निरक्षरता दूर करने में तथा ग्रामीण दरिद्रता समाप्त कर सामाजिक कुरीतियों को मिटाने हेतु ग्रामीण जीवन में जागरुकता लाने के लिए ग्रामीण विकास की अत्यंत आवश्यकता है। इस विकास में विभिन्न तत्व अपना सहयोग प्रदान करते है। ग्रामीण जीवन को विकसित कर उन्हे विकसित समाज की मुख्य धारा से जोड़ने में अनेक संगठन व संस्था में पुस्तकालय भी अपना विशिष्ट स्थान रखता है। वर्तमान समाज पुस्तकालय के बिना स्वंय को पंगु मानता है व पुस्तकालय के मार्गदर्शन के अभाव में उसका विकास अवरुद्ध हो सकता है। शहरी क्षेत्रों में पुस्तकालय जन जीवन के लिए एक आवश्यक अंग के रुप में विद्यमान है उसकी यह भूमिका ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादा लाभकारी ही सकती है।

अनुसंधान क्रियाविधि

झारखण्ड राज्य का अक्षांशीय विस्तार 21058”10 से 25018”30” उत्तर तथा देशांतरीय विस्तार 83019”50” पूर्वी देशांतर से 87057” पूर्वी देशान्तर तक है। इस राज्य का कुल क्षेत्रफल 79714 वर्ग किमी. है, जो भारत के कुल क्षेत्रफल का मात्र 2.34 प्रतिशत है। क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से भारतवर्ष का यह 13वां बड़ा राज्य है। 2001 की जनगणना के अनुसार झारखण्ड की जनसंख्या 2,69,09,428 है, जो भारतवर्ष की कुल जनसंख्या का 2.62 प्रतिशत है। जनसंख्या की दृष्टि से यह भारतवर्ष का 15वां बड़ा राज्य है। झारखण्ड राज्य के चतुर्दिक सीमाओं का यदि अवलोकन करें, तो ज्ञात होता है कि झारखण्ड के उत्तर में बिहार, दक्षिण में उड़ीसा, पूरब में पश्चिम बंगाल तथा पश्चिम में उत्तर प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ राज्य अवस्थित हैं। इस राज्य की पूरब से पश्चिम लम्बाई 463 किमी. तथा उत्तर-दक्षिण चैड़ाई 380 किमी. है।

झारखण्ड राज्य के अन्दर प्रशासनिक सीमाओं में परिवर्तन समय-समय पर होते रहे है। 1961 एवं 1971 की जनगणना के अनुसार झारखण्ड राज्य (पूर्व में बिहार) की सीमा में मात्र 6 जनपद यथा पलामू, हजारीबाग, संथाल परगना, धनवाद, राँची एवं सिंहभूमि थे। 1981 में झारखण्ड राज्य का हजारीबाग जनपद दो जनपदों जैसे हजारीबाग एवं गिरिडीह में विभक्त होकर राज्य में कुल 7 जनपद हो गया। 1991 में झारखण्ड राज्य में जनपदों का पुनः परिसिमन हुआ और राज्य में 4 नये जनपद यथा देवघर, गोड्डा, साहिबगंज एवं दुमका (संथाल परगना को विभाजित कर बनाये गये तथा संथाल परगना के नाम को खत्म कर दिया गया) तथा राँची जनपद को विभक्त कर दो और नये जनपद लोहरदग्गा एवं गुमला बना दिया गया। इसी वर्ष सिंहभूमि जनपद को भी दो जनपदों यथा पश्चिमी एवं पूर्वी सिंहभूमि में विभक्त कर दिया गया। इस प्रकार 1991 में कुल 13 जनपद यथा पलामू,

हजारीबाग, गिरिडीह, देवघर, गोड्डा, साहिबगंज, दुमका, धनबाद, राँची, लोहरदग्गा, गुमला, पश्चिमी सिंहभूमि एवं पूर्वी सिंहभूमि हो गये। 1991-2001 के मध्य पुनः झारखण्ड के जनपदों में नये जनपदों का समावेश हुआ। उदाहरण स्वरूप पलामू जनपद को गढ़वा व पलामू में विभक्त कर गढ़वा को नया जनपद बना गया। हजारीबाग को पुनः विभक्त कर तीन नये जनपद चतरा, कोडरमा एवं हजारीबाग बनाया गया। साहिबगंज जनपद को विभक्त कर पाकुड़ एवं साहिबगंज बनाया गया। गिरिडीह के दक्षिणी पश्चिमी भाग तथा धनबाद के पश्चिमी भाग को मिला कर एक नया जनपद बोकारों बनाया गया।

इस प्रकार 2001 की जनगणना में कुल 18 जनपद यथा गारखण्ड राज्य में थे अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन में 2001 की जनगणना को आधार बनाकर विश्लेषणात्मक कार्य किया गया है। मानचित्रांकन एवं कालिक विशलेषण हेतु 1981 में 7 जनपद, 1991 म 13 जनपद एवं 2001 में 18 जनपदों के आँकड़ों का उपयोग किया गया है। वर्तमान समय में झारखण्ड राज्य में 4 प्रमण्डल, 22 जिले, 33 सबडिवीजन, 211 प्रखण्ड, 3744 पंचायत तथा 33,315 गांव स्थित हैं। झारखण्ड राज्य के 22 जनपदो एवं उनकें अनुमण्डल (डिविजन) को तालिका संख्या 3.1 में अंकित किया गया है। झारखण्ड राज्य के विभिन्न जनपदों का कुल क्षेत्रफल, एवं जनसंख्या के साथ-साथ

तालिका संख्या 3.1 जनपदवार झारखण्ड राज्य का क्षेत्रफल एवं जनसंख्या (2001)

क्र. सं.	जनपद	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)			जनसंख्या		
		कुल	ग्रामीण	शहरी	कुल	ग्रामीण	शहरी
1	गढ़वा	404400	402937	1463	1,035,464	992825	42639
2	पलामू	870500	866172	4328	2,098,359	1973266	125093
3	लातेहार						
4	चतरा	129348	123420	5928	791,434	749414	42020
5	हजारीबाग	596500	572954	23546	2,277,475	1748406	529069
6	कोडरमा	149400	142794	6606	499,403	412654	86749
7	गिरिडीह	491900	490208	1692	1,904,430	1782066	122364
8	देवघर	247900	243838	4062	1,165,390	1005539	159851
9	गोड्डा	211000	210141	859	1,047,939	1010931	37008
10	साहिबगंज	159900	158580	1320	927,770	829639	98131
11	पाकुड़	180600	179752	848	701,664	665635	36029
12	दुमका	621200	616388	4812	1,759,602	1644690	114912
13	जामताड़ा						
14	धनबाद	208900	180583	28317	2,397,102	1141744	1255358
15	बोकारो	288000	252949	35051	1,777,662	973005	804657
16	रांची	769800	743673	26127	2,785,064	1807243	977821
17	लोहरदगा	149100	147643	1457	364,521	318325	46196
18	गुमला	907700	902556	5144	1,346,767	1273025	73742
19	सिमडेगा						
20	प. सिंहभूमि	990700	974380	16320	2,082,795	1731897	350898
21	सरायकेला–खरसावां						
22	पूर्वी सिंहभूमि	353300	337120	16180	1,982,988	891784	1091204
	झारखंड	797140	779215	179243	26,945,82	20952088	5993741

ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्रफल व जनसंख्या का तुलनात्मक अवलोकन तालिका संख्या 1.2 में प्रस्तुत किया गया है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार 2 नगरों (जमशेदपुर एवं धनबाद) को महानगर (10 लाख नगर) के रूप में रखा गया है; जबकि 1 लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगर झारखण्ड में 10 हैं। रांची इस प्रदेश की राजधानी है, परन्तु 2001 की जनगणना के अनुसार इसकी जनसंख्या 10 लाख से कम थी। राजधानी बनने के बाद इसकी जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई है।

डेटा विश्लेषण

अपनी पुस्तक 'शैक्षिक प्रशासन और प्रबंधन: एक एकीकृत दृष्टिकोण' में शैक्षिक प्रशासन के अर्थ, महत्व और चुनौतियों पर चर्चा की। उन्होंने संघ में शैक्षिक प्रशासन का एक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण भी दिया था औरराज्य स्तरीय शिक्षा नीति ने शिक्षा के लिए नियोजन को अपनाया और शिक्षा के लिए जनशक्ति नियोजन और वित्तीय प्रबंधन की योजना की भूमिका निभाई।उनकी किताब ने शिक्षा के उच्च और दूरस्थ शिक्षा के सभी पहलुओं और व्यापक स्तर पर एक व्यापक जानकारी दी, जो शिक्षा के इन पहलुओं को ज्ञान आयोग की सिफारिशों के आलोक में पेश करती है।

निष्कर्ष

पुस्तकालय की अवधारणा प्राचीन युग से ही है। प्राचीन समय में यह मंदिर मस्जिद व मठो में स्थापित था तब के समाज में शिक्षित वर्ग का समूह छोटा होता था परन्तु उनमें पुस्तकालय के प्रति लगाव था। पुराने समय में राजा, महाराजा या संपन्न व्यक्ति अपना व्यक्तिगत पुस्तकालय रखते थे चूँकि उस समय शिक्षा का प्रसार इन वर्गो तक ही सीमित था अत: पुस्तकालय का उपयोग भी इन वर्गो तक ही हुआ करता था तथापि यह सिध्द होता है कि लिखित मुद्रित साहित्य की उपयोगिता को उस युग में भी माना जाता था तथा उनका संग्रह करना व उन्हें सुरक्षित भावी-पीढ़ी के लिए रखना तब भी आवश्यक माना गया था। पुस्तकालय की उपयोगिता व उसकी आवश्यकता आज भी अपने उसी अर्थ व मूलभूत उद्देश्य के साथ अपना दायित्व पूरा कर रहा है। आज प्रत्येक व्यक्ति पुस्तकालय के महत्व से परिचित है तथा अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए वह पुस्तकालय को अपना निकटतम मित्र मानता है जो बिना किसी स्वार्थ के उसको सहयोग देता है। पुस्तकालय भिन्न-भिन्न रुपों में अपने दायित्वपूर्ण का निर्वहन कर रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, एम.ए. एवं शर्मा, प्रमोदः सार्वजनिक पुस्तकालय संगठन: झारखंडः आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, 1995

2. अग्रवाल, श्यामसुन्दरः ग्रंथालय एव समाज: जयपुरः आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स,1994

3. कालाओर, गोपीनाथ: ग्रंथालय विज्ञान विविध आयाम: कानपुरः विकास प्रकाशन, 1994

4. कुलश्रेष्ठ, अजय: सार्वजनिक पुस्तकालय प्रशासनः जयपुरः शब्द महिमा प्रकाशन, 1995

5. कुलश्रेष्ठ, अजयः सार्वजनिक पुस्तकालय संगठन: जयपुरः रचना प्रकाशन, 1988

6. कौशिक, श्यामलाल: शिक्षा क्रम विकास: जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी

7. ग्रामीण क्षेत्र एवं रोजगार मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली: सुनिश्चित रोजगार योजना के अन्तर्गत ग्रामीण निर्धनों के लिए रोजगार, 1995

8. गुप्ता, एम.एल. एवं शर्मा, डी.डी.: भारतीय ग्रामीण समाज शास्त्रः आगरा: साहित्य भवन

9. गुप्ता, मदन लाल: छत्तीसगढ़ दिग्दर्शन भाग-1: बिलासपुर: भारतेन्दु हिन्दी साहित्य समिति, 1998

10. गुप्ता, मदनलाल: छत्तीसगढ़ दिग्दर्शन भाग-2: बिलासपुर: भारतेन्दु हिन्दी साहित्य समिति 1998

11. चक्रवर्ती, रीता: एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम का आदिवासी अर्थव्यवस्था पर प्रभाव (शोध प्रबंध): गुरू घासीदास वि.वि. बिलासपुर म.प्र., 1990

Corresponding Author

Priyanka Kumari*

Research Scholar, Kalinga University, Raipur